International Journal of Hindi Research
ISSN: 2455-2232, Impact Factor: RJIF 5.22
www.hindijournal.com
Volume 3; Issue 2; March 2017; Page No. 95-97

भारत भूषण अग्रवाल के काव्य में नारी विमर्श

डॉ0 ओम प्रकाश

हिंदी प्रवक्ता, एम0 ए0, हिंदी, संस्कृत, पीएच0 डी0, हिंदी), बी0 एड0, चंदौसी इण्टर कॉलिज, चंदौसी, सम्भल, उत्तर प्रदेश, भारत

प्रस्तावना

प्राचीन काल से ही नारी काव्य का केन्द्र रही है। प्रत्येक काल के कवियों ने अपने काव्य में नारी को महत्वपूर्ण स्थान दिया है। ऋश्वेद काल से आधुनिक काल तक नारी ने अपने ज्ञान के माध्यम से विश्व साहित्य में नया आयाम पाया है। नारी परिवार के सत्ता का केन्द्र भी रही है। उसने अपने त्याग, प्रेम, ज्ञान के आधार से पितृसत्तात्मक सत्ता को सदैव चुनौती दी है।

प्राचीन भारत में समाज–रूपी रथ के दो पहिए थे। पुरूष और स्त्री। दोनों का ही समान महत्व और दायित्व था। यही कारण है कि वेदकालीन नारी स्वाभिमान पूर्वक अपने को सबला घोषित करती हुई दिखाई देती है।[1]

अवीरामिव माक्यं शरारूरभि मन्यते।
उलहमस्मि वीरिणीन्द्रपत्नी मरूत्सखा विश्वस्मादिन्द्र उत्तरः।। [2]

अर्थात् यह घाताक आक्रान्ता मुझे अबला की भाँति मानता है मैं अबला नहीं वीरागंना हूँ। मैं वीर की पत्नी मृत्यु से न डरने वाले, प्रणों को हथेली पर रखने वाले वीर सैनिकों की मैं मित्र हूँ। विश्व में श्रेष्ठ ऐश्वर्य–शाली इन्द्र मेरा पति है।

वहीं नारी के महत्व को मनु भी प्रतिपादित करते हुए कहते हैं कि–

यत्र नार्यस्तु न पूजयन्ते रमन्ते तत्र देवताः।
यत्रैतास्तु न पूज्यन्ते सर्वास्तत्रफलाः क्रियाः।। [3]

अर्थात् जिस कुल में नारियों का सम्मान किया जाता है उस कुल पर देवता प्रसन्न रहते हैं जहाँ नारियों का सत्कार नहीं वहाँ सब धर्म–कर्म निषफल होते हैं।

आधुनिक युगीन काव्य में नारी अबला नहीं रही, वह रीतिकालीन नारी के समान कामेच्छा की पूर्ति का साधन मात्र भी नहीं है वह स्पष्टवादी हैं और स्पष्टता के साथ अपना मनतव्य भी प्रस्तुत करती है।

मैं प्रयेसी नहीं प्रेमिका - राम की प्रेमिका।
मैनें राम से विवाह ही नहीं किया
मैनें राम से प्यार किया[4]

भारत भूषण अग्रवाल की नारी पुरूषों से भी अधिक द्दृढ़ प्रतीत होती है वह स्वयं उपहास का पात्र नहीं बनती बल्कि प्रेयसी बनकर भी पुरूषों का उपहास करना भी जानती है। 'यदि पहले तुम कह देती' कविता में पुरूष का उपहास स्पष्ट होता है–

फैलाकर अपना चल–अंचल
अहवाहन द्दगों में भर चंचल
उपहास कर रही थी मेरा जब तुमने माँगी भिक्षा दी [5]

'सुखिया उठी' कविता में कवि भारत भूषण अग्रवाल मेहनतकश नारी का चित्रण प्रस्तुत करते हुए एक ऐसे वर्ग की नारी का प्रतिनिधित्व करते हैं जो रोज अपनी जीविका चला कर अपना जीवन व्यतीत करती है और आंधी रात तक मेहनत करके थक कर सो जाती है। इस कविता में मार्क्सवाद स्पष्ट रूप से परिलक्षित होता हैः–

बेटी को उठते न देख कर हॉक लगाई माता ने!
उठूँ, उठूँ, किन्तु पड़ी ही रही अरे! वह आँखे मूदें।।
उठना चाह–चाह करके भी उठ न सकी वह।
रात देर तक, शायद डेढ बजे तक करती रही सिलाई।।[6]

भारत भूषण अग्रवाल अपने काव्य नाटक में सीता के अन्दर का क्षोभ जो पुरूष (राम) के लिए है। उसको व्यक्त करती हुई सीता कहती है कि–

हाय, वह पुरूष नारी के प्यार को क्या समझेगा।
जिसके पिता ने तीन–तीन ब्याह रचायें हों।। [7]

भारत भूषण अग्रवाल की कविता में नारी का एक अदृश्य रूप भी देखने को मिलता है। वह मैंथिलीशरण गुप्त की अबला नारी नहीं है। वह पुरूष के सामने द्दढ़ संकल्पी होकर अपनी बात रखती है और भ्रमित भी नहीं होती।

छोड़ कर हिस्ट्री मैं भी लूंगी पालिटिक्स।
समने की बेंच पर सीट मैं जमाऊँगी।।
जाऊँगी समीप नोट्स लेने के बहाने सखी।
बत रस लालसा यों अपनी बुझाऊँगी।।
देगें नहीं, तो फिर मैं प्रियर गैलरी में,
रसभरी नजरों से उनको रिझाऊँगी।।[8]

भारत भूषण अग्रवाल के पहले प्रकाशित संग्रह की पहली कविता से सूचना मिल जाती है कि कवि वायवीय प्रेम को एक जीवित जाग्रत पात्र मिल गया है जिसकी छवि को वह शब्दों और बिम्ब में बाधना चाहता है। [9]

'मिलन' कविता मे प्रेयसी के मिलन के बाद कवि के प्राण और भी व्याकुल हो उठते हैं। कवि प्रेयसी से पूर्व जैसा प्रेम चहता है परन्तु प्रेयसी द्वारा नजरें फेर लेने पर कवि पीड़ा से और पीड़ित हो जाता है और फिर कह उठता है कि–

छलकर आयी न पलकों पर विगत पहचान, मुस्कुरा पाया न ओंठो पर प्रणय का गान ज्यों जुड़ी आँखे मुड़ी, तुम, चल पडे मैं मूक इस मिलन से और भी पीड़ित हुए प्राण।[10]

'विदा की बेला में' कवि अपनी प्रेयसी के प्रेम को स्वीकार करता है और कहता है कि हृदय तथा श्वासों में भी तुम्हारी प्रीत जाग्रत है

और फिर मिलन के बाद विदा स्वीकार करने का अग्रह, वह अपनी प्रेयसी से करता है।

> मैं चाह रहा हूँ, बस बुझ जाये यहीं प्राण रूक जाय ह्रदय पर सासों में तेरी प्रीति जागी इसलिए मौन हो जाता हूँ, स्वीकार करो यह विदा आज आखिरी बार। [11]

नारी प्रेम की मूर्ति है उसके ह्रदय में प्रेम की तरगें उठा करती हैं किन्तु उसका पूर्ण उल्लसित रूप तो प्रिय के साथ रहने पर होता है। [12] भारत जी ने अपनी कविता 'अंचल' में प्रिय मिलन की बेला को दर्शित किया है। प्रेयसी के आँचल के स्पर्श मात्र से ही प्रेमी के ह्रदय मे प्रेम की हिलोरें उठने लगी हैं और तन मन सुरभित हो उठा है। कवि को सम्पूर्ण विश्व प्रेममय लगने लगा है और वह कह उठता है।

> यह सजल अंचल तुम्हारा छू चला लहरा सरस मेरे ह्रदय में स्नेह धारा।।
> रेशमी यह स्निग्ध, सुरक्षित वायु में लेता हिलोरें।
> उमड़ आती परसने को ह्रदय की ये तरल कोरें।।
> पुलक छाया रोम रग में भर गया उर व्योम सारा।। [13]

कवि ने जहाँ एक तरफ मिलन का दर्शित किया है वही दूसरी तरफ विरह को भी परिलाक्षित किया है। 'राजकुमारी' नामक कविता में कवि ने नायिका के विरह का बड़ा ही मार्मिक दृश्य प्रस्तुत किया है। नायिका की ह्रदय पीड़ा से उसी सखियां भी दुखी हो उठी हैं।

> अंखियां, उनीदी, सखियां उदास राजकुमारी कान्त विरह में करती भवन में एकान्तवास।। [14]

भारत भूषण अग्रवाल ने न केवल नायिका के ह्रदय कं मर्म को प्रस्तुत किया है बल्कि नायक के ह्रदय की पीड़ा को प्रस्तुत करते हुए भी नायिका के रूप ही वर्णन किया है।

> मेरी पीड़ा में जो विहंसे वे तेरे ही गान प्रिये वह ज्योत्स्ना–रंजित रम्य रजनि।
> जब तुम बैठी थी पास सजनि!!
> वीणा के स्वर छू गए मुझे - पल, टूट गया वह तार, किन्तु गुंजित अब भी वह तान प्रियं!! [15]

भारत भूषण अग्रवाल का नारी पात्र प्राचीन नारी पात्र की अपेक्षा सशक्त है तथा अपने अस्तित्व पर आंच आने से पहले ही वह उसको भाप जाती है। वह दोहरे चरित्र वाले समाज के प्रति सजग व मुखर है और उसके प्रतिरोध के लिए तत्पर है, कवि ने सीता के माध्यम से नारी के इस सशक्त रूप को परिलक्षित किया है–

> राम ने तो मुझे बहुत पहले ही छोड़ दिया था आज मैं भी राम को छोड़ती हूँ।
> अब मैं स्वतन्त्र हूँ, मुक्त हूँ, अपने आप में पूर्ण हूँ, आप अपनी निर्देशिका, आप अपनी कर्त्री, और आप अपनी भोक्ता हूँ। [16]

भारत जी के काव्य की नारी विदूषी नारी है उसे छन्दों का ज्ञान है उसे व्याकरण की समझ है। वह रीतिकालीन काव्यधारा की नारी नहीं, जो कि नख–शिख सौन्दर्य का वर्णन मात्र रही है। वह आधुनिक नारी है जो कि पुरुष के रचनात्मक कार्य की भूलों के प्रति ध्यान आकृष्ट करती है और उनमें सुधार भी करती है। कवि के शब्दों में:–

> वे कितने अभागे थे जयदेव, चण्डीदास, धनानन्द जिनकी प्रेमिकाओं को यह भी पता न था कि वे काव्य रचते थे मैं कितना भाग्यवान हूँ कि तुमने मेरी कविताऐं सिर्फ पढ़ी ही नहीं हैं उनमें तुमने पिगंल की भूलें भी निकाली हैं।[17]

भारत जी के काव्य की एक विशेषता रही है पैराडियां बनाना। उन्होनें पैरोडियों के माध्यम से भी नारी रूप का सुन्दर दृश्य प्रस्तुत किया है। सुभद्रा कुमारी चौहान की कविता की पक्तियां ''बुन्देलो हर बालो के मुँह हमने सुनी कहानी थी खूब लड़ी मर्दानी वह तो झाँसी पाली रानी थी'' पर पैरोडी बनाते हूए मिसरानी के व्यवहार को दर्शित किया है।

> भार्गव हॉस्टल वालो के मुँह हमने सुनी कहानी थी
> खाना खूब खिलाती वह मथुरा की मिसरानी थी।[18]

इसी श्रंखला मे भगवती शरण वर्मा की कविता पर पैराडी के माध्यम से नारी के रूप की तुलना बंगाली मिठाई से करते हुए कविता के आधुनिक रूप का परिचय प्रस्तुत किया है।

> कल तुम कॉलेज में आई कुछ फटे दूध की बढिया बंगाली सुमिठाई–सी [19]

भारत भूषण अग्रवाल ने बहुत से तुक्तकों की रचना की है। उनके काव्य तुक्तक के माध्यम से अनेक समस्यायें उठाई गई हैं। जिनमें से एक समस्या महरी (घर मे काम करने वाली स्त्री) की है। अपने तुक्तक मे महरी के देर से आने पर गृहणी के गुस्से को प्रदर्शित किया है।

> गृहिणी बरस पडी, सुन रो ओ महरी, रोज–रोज करती है तू क्यों देर कहरी ?[20]

अपने एक अन्य तुक्तक के माध्यम से भारत जी ने विवाह से पूर्व और विवाह के पश्चात् नारी व्यवहार में होने वाले परिवर्तन को तथा घर गृहस्थी के कारण होने वाली समस्या को भी अत्यन्त सुगमता से प्रदर्शित किया है।

> मीरा के भजन 'चरणों में मन लागा' गाया करती थी रोज मिस मीरा आगा किन्तु जब हुआ ब्यात ढल गया उत्साह गृहस्थी के झंझटों में होने लगी नागा ![21]

भारत जी का नारी विमर्श बहुत सटीक है उन्होनें प्राचीन नारी (सीता) को भी आधुनिक नारी के विचारों से मेल करते हुए प्रस्तुत किया है भारत जी की नारी परिश्रमी है प्रेयसी है तथा सशक्त भी है। भारत जी का नारी विमर्श सरल सुबोध तथा बोधगम्य है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. देवराज, नई कविता, पृ0. 34
2. ऋग्वेद (10 / 86 / 9)
3. मनुस्मृति, अनुवादकः गिरजा प्रसाद द्विवेदी मुशीनवल किशोर सी0आई0ई0 छापाखाना लखनऊ पृ0. 75
4. सम्पादकः बिन्दु अग्रवाल, भारत भूषण अग्रवाल, रचनावली खण्ड दो, पृ0. 60
5. सम्पादकः बिन्दु अग्रवाल, भारत भूषण अग्रवाल, रचनावली खण्ड एक, पृ0. 137
6. सम्पादकः बिन्दु अग्रवाल, भारत भूषण अग्रवाल, रचनावली खण्ड एक, पृ0. 157

7. सम्पादकः बिन्दु अग्रवाल, भारत भूषण अग्रवाल, रचनावली खण्ड दो, पृ0. 63
8. सम्पादकः बिन्दु अग्रवाल, भारत भूषण अग्रवाल, रचनावली खण्ड एक, पृ0. 495
9. डॉ0 मूल चन्द गौतम, भारत भूषण अग्रवाल, भारती साहित्य के निर्माता, साहित्य अकादमी नई दिल्ली पृ0. 27
10. अज्ञये, तारसप्तक स0–ज्ञानपीठ प्रकाशन दिल्ली पृ0. 94
11. अज्ञये, तारसप्तक स0– ज्ञानपीठ प्रकाशन दिल्ली पृ0. 95
12. जयकिशन प्रसाद, हिन्दी साहित्य का आधुनिक काल, विनोद पुस्तक मन्दिर हास्पिटल रोड आगरा, पृ0 144
13. सम्पादकः बिन्दु अग्रवाल, भारत भूषण अग्रवाल, रचनावली खण्ड एक, पृ0. 71
14. सम्पादकः बिन्दु अग्रवाल, भारत भूषण अग्रवाल, रचनावली खण्ड एक, पृ0. 58
15. सम्पादकः बिन्दु अग्रवाल, भारत भूषण अग्रवाल, रचनावली खण्ड एक, पृ0. 68
16. सम्पादकः बिन्दु अग्रवाल, भारत भूषण अग्रवाल, रचनावली खण्ड दो, पृ0. 68
17. भारत भूषण अग्रवाल, अनुपस्थित लोग, पृ0. 63
18. सम्पादकः बिन्दु अग्रवाल, भारत भूषण अग्रवाल, रचनावली खण्ड एक, पृ0. 488
19. सम्पादकः बिन्दु अग्रवाल, भारत भूषण अग्रवाल, रचनावली खण्ड एक, पृ0. 490
20. सम्पादकः बिन्दु अग्रवाल, भारत भूषण अग्रवाल, रचनावली खण्ड एक, पृ0. 503
21. सम्पादकः बिन्दु अग्रवाल, भारत भूषण अग्रवाल, रचनावली खण्ड एक, पृ0. 14